अध्याय 22

# एलीपज का तीसरा भाषण

भाषणों के तीसरे दौर में (22:1–27:23), एलीपज ने अय्यूब पर सीधे–सीधे स्पष्ट पापों के साथ आक्रमण किया (22:1–30)। बिलदद ने, केवल छह आयतों में संक्षेप में बात की और इसमें कुछ भी जोड़ा नहीं (25:1–6)। सोपर कुछ नहीं बोला।[1] एच. एच. रोअले ने टिप्पणी की है,

> तीसरे दौर में वे अय्यूब पर अधिक तीखे प्रहार करने लगे और उस पर साफ़ साफ़ खतरनाक पापों का आरोप लगा दिया। यह स्पष्ट है कि ये पाप उनकी धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं के आधार पर उनके अपने निष्कर्षों से बढ़कर नहीं हैं। उनके आरोप का आधार कोई प्रमाण नहीं था बल्कि केवल उनकी कल्पनाएं थीं, जो उनके लिए किसी भी प्रमाण से बढ़कर महत्वर्पूण हैं।[2]

अध्याय 22 में, एलीपज किसी के तर्कों की सच्चाई का उत्तर न दे पाने वालों के जाल में फंस कर निजी हमला करता है। आयतें 6 से 9 में उसने अय्यूब पर एक व्यक्ति के रूप में प्रश्न, अप्रमाणित आरोप लगा दिए। आयतें 21 से 30 ''कई अच्छे वाक्यांशों वाला सुन्दर सुसमाचारीय संदेश हैं ... यह गलत मरीज को दी गई अच्छी दवा का एक और उदाहरण है।''[3]

## ''हे अय्यूब, तेरी बुराई बड़ी है'' (22:1–11)

**[1]तब तेमानी एलीपज ने कहा, [2]''क्या मनुष्य से परमेश्वर को लाभ पहुँच सकता है? जो बुद्धिमान है, वह अपने ही लाभ का कारण होता है। [3]क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता है? तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता है? [4]वह तो तुझे डाँटता है, और तुझ से मुक़द्दमा लड़ता है, तो क्या यह तेरी भक्ति के कारण है? [5]क्या तेरी बुराई बहुत नहीं? तेरे अधर्म के कामों का कुछ अन्त नहीं। [6]तू ने अपने भाई का बन्धक अकारण रख लिया है, और नंगे के वस्त्र उतार लिये हैं। [7]थके हुए को तू ने पानी न पिलाया, और भूखे को रोटी देने से इनकार किया। [8]जो बलवान था उसी को भूमि मिली, और जिस पुरुष की प्रतिष्ठा थी, वही उसमें बस गया। [9]तू ने विधवाओं को छूछे हाथ लौटा दिया, और अनाथों की बाहें तोड़ डालीं। [10]इस कारण तेरे चारों ओर फन्दे लगे हैं, और अचानक डर के मारे तू घबरा रहा है। [11]क्या तू अन्धियारे को नहीं देखता, और उस बाढ़ को जिसमें तू डूब रहा है?''**

इस पद्य में परमेश्वर के निष्पक्ष न्याय पर ज़ोर दिया गया है और इसका अंत अय्यूब के विरुद्ध पाप के स्पष्ट आरोपों के साथ होता है।

**आयतें 1, 2. एलीपज** ने यह पूछते हुए आरम्भ किया, ''**क्या मनुष्य से परमेश्वर को लाभ पहुँच सकता है? जो बुद्धिमान है, वह अपने ही लाभ का कारण होता है।**'' ''मनुष्य'' इब्रानी शब्द

*geber* (*गेबेर,* ''ताकतवर मनुष्य'') का अनुवाद है। जॉन एन. ऑसवल्ट ने लिखा है, ''मनुष्य के लिए *'ādām, 'ish, 'enôsh*, जैसे, सामान्य शब्दों से अलग होने के कारण यह शब्द विशेष रूप में नर के उसके बल की ऊंचाई से सम्बन्धित है। जिस कारण यह विनम्रता को इसके सबसे सक्षम और योग्य स्तर पर दिखाता है।''[4] अय्यूब की पुस्तक में पूरे भाषणों में *गेबेर* पन्द्रह बार आता है।

''बुद्धिमान'' (*maśkil, मसकील*) शब्द क्रिया शब्द *śakal* (*शाकाल*) से लिया गया है। यह शब्द उस व्यक्ति को दर्शाता है जिसमें परख (नीतिवचन 1:3) है और वह समझदारी से काम करता है (नीतिवचन 19:14)। वह धर्मी भी है और सफ़ल भी। एलीपज ने यह तर्क दिया कि यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो भी तौभी वह किसी भी रीति से परमेश्वर को आकर उसकी सहायता करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता।[5]

**आयत 3. ''क्या तेरे धर्मी होने से सर्वशक्तिमान सुख पा सकता है?''** एलीपज आयत 2 वाले सामूहिक शब्द ''मनुष्य'' से अय्यूब का सामना करते हुए आयत 3 में व्यक्तिगत ''तेरे'' की ओर बढ़ा। अपने पहले भाषण के बाद से अय्यूब के प्रति एलीपज के व्यवहार में बड़ा बदलाव आ गया! वहां पर उसने अय्यूब को उसके किए हुए भले कामों की उसकी सराहना की (4:3-6)। ''सुख'' और ''हर्ष'' का अनुवाद इब्रानी शब्द *chepets* (*चपेटस*) से किया गया है जिसका अर्थ है ''स्वीकार, दिलचस्पी, लाभ,'' और इस संदर्भ में इसका अर्थ ''फायदा'' है।[6] यह सच है कि परमेश्वर को लोगों की धार्मिकता में सुख मिलता है: ''जो मेरे धर्म से प्रसन्न रहते हैं, वे जयजयकार और आनन्द करें, और निरन्तर कहते रहें, यहोवा की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है!'' (भजन संहिता 35:27)।

**''तेरी चाल की खराई से क्या उसे कुछ लाभ हो सकता है?''** ''लाभ'' (*betsa', बेटसा*) शब्द का अर्थ है ''हिंसा से प्राप्त किया गया लाभ'' या ''(अनुचित) लाभ।''[7] यह वही शब्द है जिसका इस्तेमाल यहूदा द्वारा किया गया था, जब उसने अपने भाइयों से पूछा, ''अपने भाई को घात करने और उसका खून छुपाने से क्या लाभ होगा?'' (उत्पत्ति 37:26)। एलीपज के कहने का मतलब था कि किसी का भी जीवन इतना पवित्र नहीं हो सकता है कि वह परमेश्वर से कुछ करने को कह सके।

**आयत 4. ''वह तो तुझे डाँटता है, और तुझ से मुक़द्दमा लड़ता है, तो क्या यह तेरी भक्ति के कारण है?''** ''भक्ति'' (*yir'ah, यिरा*) का अनुवाद एलीपज के पहले भाषण में ''भय'' हुआ है: ''क्या परमेश्वर का भय ही तेरा आसरा नहीं?'' (4:6)। अपने दूसरे भाषण में एलीपज ने अय्यूब पर ''परमेश्वर का भय मानना छोड़ [देने] और परमेश्वर पर ध्यान लगाना औरों से [छुड़ाने]'' का आरोप लगाया था (15:4)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने टिप्पणी की है:

> एलीपज ने बिना प्रमाण यह मान लिया कि परमेश्वर अय्यूब को डांट रहा है। एकमात्र प्रश्न यह था कि क्यों। एलीपज के [अपने ही] प्रश्नों के उत्तर सच्चाई के बिल्कुल उलट हैं। सच तो यह है कि अय्यूब को शैतान द्वारा मान लिए जाने पर ही, कि भले लोग परमेश्वर की सेवा निजी लाभ के लिए करते हैं अय्यूब की भक्ति के कारण ही उसे एक आदर्श के रूप में चुना गया था।[8]

''मुक़द्दमा लड़ना'' किसी को अदालत में ले जाना या उसकी पेशी कराना है (देखें TEV)।

**आयत 5.** यहां पर, एलीपज ने साफ़ साफ़ अय्यूब पर पापी होने का आरोप लगाया, जो कि

पहले लगाए गए किसी भी आरोप से अधिक स्पष्ट था। उसने कहा कि अय्यूब के पाप **बहुत** थे और उनका **कुछ अंत** या ''सीमा'' **नहीं**। **बुराई** (*ra'ah, राह*) परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध की गई कोई भी गतिविधि है, जो आम तौर पर परमेश्वर को ठुकराने के साथ आरम्भ होती है। **अधर्म** (*'awon, आवन*) से आम तौर पर ''सरकारी या सामाजिक उल्लंघनों को'' कहा जाता है पर यह ''परमेश्वर और मनुष्य के विरुद्ध कालांतर में किए गए पाप''[9] हो सकता है।

**आयतें 6–9.** एलीपज ने उन स्पष्ट पापों को गिनाया जो उसे लगा कि अय्यूब ने किए थे:

1. ''**तू ने अपने भाई का बंधक अकारण रख लिया था।**''
2. ''[तू ने] **नंगे के वस्त्र उतार लिए है।**''
3. ''**थके हुए को तू ने पानी न पिलाया।**''
4. ''[तू ने] **भूखे को रोटी देने से इनकार कर दिया।**''
5. ''**तू ने विधवाओं को छूछे हाथ लौटा दिया।**''
6. ''[ तू ने] **अनाथों की बाहें तोड़ डालीं**''

ये सब पाप उसके साथियों के साथ किए गए उसके दुर्व्यवहार के दायरे में आते थे: ''भाइयों,'' ''लोगों,'' ''थके हुओं,'' ''भूखों,'' ''विधवाओं'' और ''अनाथों।'' अध्याय 31 में अय्यूब ने झूठे आरोपों का खण्डन किया, जो कि बाइबल में मिलने वाले नैतिकता के सबसे बड़े वाक्यों में से एक है। बेसहारों की उचित चिंता मूसा की व्यवस्था और नबियों की पुस्तकों में भी मिलती है (निर्गमन 22:21–27; व्यवस्थाविवरण 24:6, 10–15, 17–22; 26:12; 27:19; यशायाह 1:17; 32:6; 58:7, 10; यिर्मयाह 7:6; यहेजकेल 18:5–9; जकर्याह 7:10; मलाकी 3:5)।

आल्डन ने लिखा, ''पहली बार एक मित्र ने अय्यूब पर सीधे–सीधे पापों का आरोप लगाया, जो सभी सम्पत्ति से सम्बन्धित – लालच और कंजूसी के बारे में थे। घमण्ड के बाद, धन के उपयोग या दुरुपयोग से सम्बन्धित पाप शायद सबसे संगीन, विशेषकर सरमायदारों के बीच होते हैं।''[10]

**आयतें 10, 11.** फिर एलीपज ने अय्यूब की काल्पनिक दुष्टता के परिणाम बताए। अलंकारिक रूप में कहें तो **फंदे**, **अचानक डर**, **अंधियारा**, और **बाड़** वे माध्यम थे जिनके द्वारा अय्यूब को पकड़ा गया था और दबाया गया था। उन्हें परमेश्वर और अपने साथियों के प्रति अय्यूब की बुराइयों के परिणामों के रूप में देखा गया। ''फंदे'' मूलतया पक्षी पकड़ने वाल फंदे हैं (18:8–10 पर टिप्पणियां देखें)।

## ''मनुष्य के मार्ग परमेश्वर से छिपे नहीं हैं'' (22:12–20)

**12''क्या परमेश्वर स्वर्ग के ऊँचे स्थान में नहीं है? ऊँचे से ऊँचे तारों को देख कि वे
कितने ऊँचे हैं। 13फिर तू कहता है, 'परमेश्वर क्या जानता है? क्या वह घोर अन्धकार की
आड़ में होकर न्याय कर सकता है? 14काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ
नहीं देख सकता, वह तो आकाशमण्डल ही के ऊपर चलता फिरता है।' 15क्या तू उस पुराने
रास्ते को पकड़े रहेगा, जिस पर अनर्थ करनेवाले चलते हैं? 16वे अपने समय से पहले उठा
लिए गए और उनके घर की नींव नदी बहा ले गई। 17उन्होंने परमेश्वर से कहा था, 'हम से**

**दूर हो जा;' और यह कि, 'सर्वशक्तिमान हमारा क्या कर सकता है?' [18]तौभी उसने उनके घर अच्छे अच्छे पदार्थों से भर दिए – परन्तु दुष्ट लोगों का विचार मुझ से दूर रहे। [19]धर्मी लोग देखकर आनन्दित होते हैं; और निर्दोष लोग उनकी हँसी करते हैं, [20]'जो हमारे विरुद्ध उठे थे, निःसन्देह मिट गए और उनका बड़ा धन आग का कौर हो गया है।'''**

एलीपज परमेश्वर के रवैये और प्रतिक्रिया पर विचार करने के अय्यूब के परिकल्पित दोष से आगे बढ़ा।उसने घोषणा की कि दुष्टों को उनके पापों का दण्ड मिलेगा और धर्मी इसे देखेंगे और आनन्दित होंगे।

**आयत 12. ''क्या परमेश्वर स्वर्ग के ऊँचे स्थान में नहीं है?''** हो सकता है कि एलीपज अय्यूब के इस विश्वास का मजाक उड़ा रहा हो कि परमेश्वर इतनी दूर है कि उसे मनुष्य के अंत की कोई परवाह नहीं है। परमेश्वर **ऊंचे से ऊंचे तारों** से परे है।

**आयत 13. ''फिर तू कहता है, 'परमेश्वर क्या जानता है? क्या वह घोर अन्धकार की आड़ में होकर न्याय कर सकता है?'''** एलीपज आयत 12 से निकाले गए अपने निष्कर्ष के आधार पर अय्यूब के मुंह में शब्द डाल रहा था। वह अय्यूब के ऊपर ''व्यावहारिक नास्तिक'' या ''आधुनिक आस्तिकता'' का आरोप लगा रहा था जो यह पुष्टि करता है कि परमेश्वर जिसने संसार को बनाया है तो सही है, पर वह इससे कहीं दूर है और उसे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि इसके साथ क्या होता है।

**आयत 14. '''काली घटाओं से वह ऐसा छिपा रहता है कि वह कुछ नहीं देख सकता।'''** यह बात पिछली आयत के विचार को मज़बूत करती है। जो लोग इस बात को मानते हैं उनकी उस परमेश्वर में कोई दिलचस्पी नहीं है, जो इतनी दूर और गुमनामी में छिपा हुआ है कि उसे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि पृथ्वी पर क्या हो रहा है।

**आयतें 15–20.** एलीपज ने अपनी बात को यह पुष्टि करते हुए खत्म किया कि परमेश्वर देखता है और **अनर्थ करने वाले** लोगों को दण्ड देता है। विद्रोही लोग अपनी इस चुनौती पर दृढ़ हैं।**''उन्होंने परमेश्वर से कहा था, 'हम से दूर हो जा;' और यह कि, 'सर्वशक्तिमान हमारा क्या कर सकता है?'''** बाढ़ें और **आग** इन बुराई करने वालों को परमेश्वर के दण्ड का प्रतीक हैं। दुष्टों को दिए जाने वाले दण्ड के दो प्रमुख उदाहरण नूह के समय का जलप्रलय (उत्पत्ति 6–8) और आग से सदोम और अमोरा का नाश (उत्पत्ति 19:1–29) हैं। **धर्मी लोग** परमेश्वर के न्याय को **देखकर आनन्दित होते हैं**।

## ''परमेश्वर से मेल मिलाप कर तब तुझे चंगाई मिलेगी'' (22:21–30)

**[21]''उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इससे तेरी भलाई होगी। [22]उसके मुँह से शिक्षा सुन ले, और उसके वचन अपने मन में रख। [23]यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके समीप जाए, और अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे, तो तू बन जाएगा। [24]तू अपनी अनमोल वस्तुओं को धूल पर, वरन् ओपीर का कुन्दन भी नालों के पत्थरों में डाल दे, [25]तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु और तेरे लिये चमकीली चाँदी होगा। [26]तब तू सर्वशक्तिमान से सुख पाएगा, और परमेश्वर की ओर अपना मुँह बेखटके उठा सकेगा। [27]तू उससे प्रार्थना करेगा, और वह तेरी सुनेगा; और तू अपनी मन्नतों को पूरी**

**करेगा। 28जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा। 29चाहे दुर्भाग्य हो तौभी तू कहेगा कि सौभाग्य होगा, क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है। 30वरन् जो निर्दोष न हो उसको भी वह बचाता है; तेरे शुद्ध कामों के कारण तू छुड़ाया जाएगा।''**

एलीपज अय्यूब के लिए उत्साहपूर्वक परामर्श देने के लिए मुड़ा कि अय्यूब ने अपने जीवन में जो भी बुराई की हो, जिससे उसकी इतनी बुरी हालत हुई है, उससे मन फिरा ले। ये शब्द पिछली आयतों से कहीं अधिक करुणा से भरे लगते हैं। यह लहज़ा अय्यूब को उसके पहले भाषण की उसकी पहले वाली ताड़ना के जैसा ही है (5:17–27)।

**आयत 21. ''उस से मेलमिलाप कर तब तुझे शान्ति मिलेगी; और इससे तेरी भलाई होगी।''** ''मेल मिलाप'' (*sakan, सकन*) शब्द का अर्थ किसी ''काम का होना'' या ''के साथ मिलान कर लेना'' हो सकता है।[11] बाद वाली परिभाषा इस आयत में अधिक सम्भव लगती है, जहां क्रिया शब्द तीव्र रूप में मिलता है। जॉन ई. हार्टले ने टिप्पणी की है, ''एलीपज के अनुसार, आदमी चाहे परमेश्वर को लाभ नहीं दे सकता [22:2],[12] पर वह परमेश्वर से मेल मिलाप करके स्वयं को अच्छी चीज़ें बहुतायत में पाकर स्वयं को लाभ दिला सकता है।''[13] एलीपज की बातों का विषय वही है कि अच्छी बातें अच्छे लोगों के साथ और बुरी बातें बुरे लोगों के साथ होती हैं, वही सुझाव जिसे अय्यूब ने दिखाया है कि यह हर जगह लागू नहीं होता।

**आयत 22. ''उसके मुँह से शिक्षा सुन ले, और उसके वचन अपने मन में रख।''** ''शिक्षा'' (*torah, तोरह*) शब्द अय्यूब की पुस्तक में केवल एक बार यहीं पर मिलता है। पुराने निमय में जहां यह मूसा की पुस्तक की ओर संकेत करता है, वहीं यहां पर यह ''बुद्धिमान पुरखाओं के द्वारा जिन्हें परमेश्वर ने अपने मार्गों की समझ दी थी पीढ़ी दर पीढ़ी आगे दिए गए नियम प्रतीत होता है।''[14] एलीपज इस समूह में अपने आपको शामिल कर रहा था (देखें 4:12–21; 15:11)।

**आयत 23, 24.** अध्याय की अंतिम आयतें दो सशर्त (''यदि ... तो'') वाक्य बनाती हैं। आयत 23 में उनमें से एक वाक्य है: **''यदि तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरके समीप जाए, तो तू बन जाएगा।''** एलीपज ने अय्यूब को परमेश्वर की ओर ''फिरने का'' आग्रह किया ताकि उसका समृद्धि का पुराना जीवन फिर से ''बन जाए।''

आल्डन ने लिखा, '''बन जाए' मूल शब्द (*bnh, बन्ह*) से लिया गया है, जिसका अर्थ आम तौर पर इमारत या परिवार दोनों में से किसी का 'बनना/फिर से बनना' होता है। अय्यूब के अंत में सात और *bānîm* अर्थात 'बेटे' और तीन और *bānôt* अर्थात 'बेटियां' होने के प्रकाश में यह पसंद दिलचस्प है (42:13)।''[15]

''फिरना'' (*shub, शब*) का अर्थ ''मन फिराना'' है। पर समस्या यही है! अय्यूब ने ऐसे पाप नहीं किए थे जिनसे उसे इतना दुःख सहना पड़ता। उसने आयत 23 में एलीपज द्वारा बताए गए अर्थ में ''कुटिल काम'' नहीं किए थे।

इन आयतों में सशर्त वाक्य का ''यदि'' वाला दूसरा भाग है; आयतें 25 से 30 में ''तो'' वाला भाग है। **''अपने डेरे से कुटिल काम दूर करे, तू अपनी अनमोल वस्तुओं को धूल पर, वरन ओपीर का कुन्दन भी नालों के पत्थरों में डाल दे।''** एलीपज ने अय्यूब को ''अपने डेरे से कुटिल काम दूर'' करके उस सारी जायदाद से जो उसने बेईमानी से कमाई थी, अपने आपको अलग करने का आग्रह किया (देखें 11:14)। ऐसा करने से यह साबित हो जाना था कि उसका

समर्पण पैसे के प्रति नहीं, बल्कि परमेश्वर के प्रति है। अपनी ''अनमोल वस्तुओं को धूल पर'' या ''कुन्दन नालों के पत्थरों में'' डाल देने का अर्थ था इसे इसकी मूल जगह में लौटा देना। यानी इसे उन्हीं को वापस कर देना जिनसे उसने इसे छल से पाया था (देखें लूका 19:8)।

''ओपीर'' एक जगह का नाम था जो अपने ''सोने'' के लिए प्रसिद्ध थी (1 इतिहास 29:4; अय्यूब 28:16; भजन संहिता 45:9; यशायाह 13:12)। राजा सुलैमान ने वहां से सोना और अन्य आकर्षक खजाने लाने के लिए अपने जहाज़ भेजे (1 राजाओं 9:26–28; 10:11, 12)। ओपीर की भौगोलिक स्थिति के सही-सही होने पर अपवाद है पर इस जगह को आम तौर पर लाल समुद्र के तट के साथ-साथ दक्षिणी अरब के साथ मिलाया जाता है।

**आयतें 25–30.** इस सशर्त वाक्य के ''तो'' वाले भाग में एलीपज ने वे पांच आशिषें बताईं जो अय्यूब को मिलनी थी, यदि वह मन फिराकर परमेश्वर की ओर लौट आता।

1. ''**तब सर्वशक्तिमान आप तेरी अनमोल वस्तु और तेरे लिये चमकीली चाँदी होगा**'' (22:25)। परमेश्वर ने एक बार फिर से अय्यूब का खजाना होना था। यह बात एलीपज के अपने नाम के साथ मेल खाती है, जिसका अर्थ है ''मेरा परमेश्वर कुंदन सोना है।'' पुस्तक में बाद में सोने पर कभी भी भरोसा रखने की बात से इनकार किया (31:24, 28)।
2. ''**तू उससे प्रार्थना करेगा, और वह तेरी सुनेगा**'' (22:27)। अय्यूब के मन फिरा लेने के बाद कोई भी बात परमेश्वर के सामने उसकी प्रार्थनाओं में रुकावट नहीं बननी थी। एलीपज ने उसके मन में डाल दिया कि अय्यूब के पतन के समय से लेकर अब तक परमेश्वर ने अय्यूब की जोश से भरी विनतियों को नहीं सुना था।
3. ''**जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा**'' (22:28)। अय्यूब के परमेश्वर की इच्छा के प्रति अपने आपको सौंप देने के बाद परमेश्वर ने उसके मन की इच्छाओं के अनुसार उसे देना था (देखें भजन संहिता 37:4, 5)।
4. ''**चाहे** [उनका] **दुर्भाग्य हो**[16] **तौभी तू कहेगा कि सौभाग्य होगा, क्योंकि वह नम्र मनुष्य को बचाता है**'' (22:29)। अय्यूब ने उनकी सहायता कर पाना था जो उन से प्रोत्साहन की बात करने से परेशान हो गए थे। परमेश्वर ने अपने धर्मी सेवक की बात सुननी थी और उन्हें आशीष देनी थी जो निराश थे।
5. ''**वरन् जो निर्दोष न हो उसको भी वह बचाता है; तेरे शुद्ध कामों के कारण तू छुड़ाया जाएगा**'' (22:30)। अय्यूब ने दोषियों की सिफारिश करनी थी और परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का अनुकूल उत्तर देना था। ''एलीपज को ये शब्द कितने परेशान करते होंगे, जब परमेश्वर ने अय्यूब से अपने और अपने मित्रों के लिए प्रार्थना करने को कहा (42:7–10)।''[17]

यह परामर्श बहुत अच्छा था पर यह अय्यूब के मामले में लागू नहीं होता था। एलीपज की अपील उन आरोपों के आधार पर थी जिनकी कोई मान्यता नहीं थी। हार्टले ने कहा है, ''परमेश्वर के पक्ष में सही सफ़ाई किसी दूसरे मानवीय जीव को नीचा दिखाने वाली नहीं होनी चाहिए।

एलीपज यह समझ नहीं पाया कि अय्यूब को दोषी ठहराकर वह अय्यूब के सृजनहार परमेश्वर पर भी दोष लगा रहा है।''[18]

## प्रासंगिकता

### झूठे आरोपों के साथ निपटना ( 22:5-11 )

अय्यूब 22 में, जो भाषणों के तीसरे दौर का आरम्भ है, एलीपज ने अय्यूब पर कुछ पाप करने का झूठा आरोप लगाया। आयत 5 में उसने यह अलंकारिक प्रश्न पूछा: ''क्या तेरी बुराई बहुत नहीं? तेरे अधर्म के कामों का कुछ अन्त नहीं।'' फिर उसने अय्यूब पर अपने साथियों के साथ व्यवहार के लिए आक्रमण किया। एलीपज ने अय्यूब पर इन पापों का आरोप लगाया: अकारण बंधक रखना, नंगे के वस्त्र उतार लेना, थके हुए को पानी न पिलाना, भूखे को रोटी देने से इनकार करना, विधवाओं को छूछे हाथ लौटा देना, और अनाथों की बाहें तोड़ डालना (22:6-9)। इसके अलावा, उसने अय्यूब को बताया कि अपने इन पापों के कारण अय्यूब फंदों, अचानक डर, अंधियारे और बाढ़ में फंसा था (22:10, 11)। यदि हम अय्यूब की जगह होते तो हम ऐसे लांछनों का कैसे जवाब देते? आज जब हम पर झूठे आरोप लगते और हमारे बारे में गलत बातें कही जाती हैं तो हमें क्या करना चाहिए?

*बुराई के बदले बुराई न करो।* हमारी बातों को तोड़ मरोड़कर या हमारे कामों को गलत ढंग से पेश करने वालों को जैसे का तैसा देने का प्रलोभन रहता है। हमारा मन भी उनको गलत ढंग से पेश करने और उन पर झूठे आरोप लगाने का हो सकता है। परन्तु मसीह हमें जीने के ऊंचे जहाज़ में बुलाता है। पहाड़ी उपदेश में उसने कहा:

> धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें। तब आनन्दित और मगन होना, क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है। इसलिये कि उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहले थे इसी रीति से सताया था (मत्ती 5:11, 12)।

*धार्मिकता से जीना जारी रखें।* कोई इस प्रकार से तर्क दे सकता है: ''यदि लोग जिनके साथ में रहता हूं पाप में लगे हुए हों, तो मैं भी ऐसा ही करूंगा।'' परन्तु शायद यह साबित करने का कि किसी दूसरे के आरोप गलत हैं उसे दोहराते रहने से जो सही हैं बढ़कर और कोई तरीका नहीं है। पतरस ने लिखा, ''अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; ताकि जिन-जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जानकर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देखकर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें'' (1 पतरस 2:12)।

*कुछ मामलों में, हिसाब ठीक करें।* समाज में अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए अपनी निष्ठा की रक्षा करना आवश्यक हो सकता है। बाद में, अध्याय 31 में अय्यूब ने बिल्कुल यही किया। उसने विस्तार से समझाया कि उसने अपने साथी के साथ कोई दुर्व्यवहार नहीं किया था। वास्तव में वह हर किसी के साथ चाहे वह उसकी पत्नी और, उसके नौकर, विधवाएं, अनाथ, निर्धन, परदेसी, उसके कर्मचारी, उसके कारोबारी साथी, और यहां तक कि उसके शत्रु भी, वह

हर किसी के साथ खराई, वफादारी, दया और करुणा से पेश आया था! नये नियम में पौलुस ने बार-बार उसकी शिक्षा को तोड़ने मरोड़ने और उसकी प्रेरिताई को कम करने वालों के विरुद्ध बार-बार अपनी सफ़ाई दी। अंत में उसने ऐसा कलीसिया की बेहतरी के लिए किया।

*अपने प्राणों को धर्मी न्यायी के हाथ सौंप दें।* सबसे महत्वपूर्ण जिसे हमें हिसाब देना है वह परमेश्वर है और वह सब कुछ जानता है। 31:6 में, अय्यूब ने घोषणा की, ''तो मैं धर्म के तराजू में तौला जाऊं, ताकि ईश्वर मेरी खराई को जान ले।'' अपनी पृथ्वी की सेवकाई के दौरान यीशु ने हम से अपने साथी के विचार के बजाय परमेश्वर के विचार की अधिक परवाह करना सिखाया (मत्ती 10:28)। पतरस ने हम से अपने साथ दुर्व्यवहार होने पर यीशु के पदचिह्नों पर चलने को कहा। मसीह ''गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दु:ख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था'' (1 पतरस 2:23)।

*सारांश:* दूसरों की बातें हमें गम्भीर चोट पहुंचा सकती हैं – वैसे ही जैसे अय्यूब के मित्रों की बातों से उसे चोट पहुंची। हमें अपने ऊपर झूठे आरोप लगाए जाने पर पलटकर वार नहीं करना चाहिए। इसके बजाय हमें मसीह के नमूने का अनुकरण करना चाहिए, जिसने अपने आपको परमेश्वर को सौंप दिया। हम दूसरों की दु:ख देने वाली बातों को अपने आपको भक्तिपूर्ण जीवन जीने से रोकने नहीं दे सकते। कुछ परिस्थितियों में हिसाब बराबर करना आवश्यक हो सकता है। हम अफवाहें न फैलाएं, या झूठे आरोप न लगाएं। हम समझ सकते हैं कि इससे दूसरों की प्रतिष्ठा पर गहरे धब्बे पड़ सकते हैं।

### कुछ ''अच्छी सलाह'' (22:21-30)

मित्रों की सलाह में समस्या यह है कि यह अय्यूब की परिस्थिति से मेल नहीं खाते। उन्होंने उसके बड़े कष्ट को किसी गुप्त पाप का कारण बताया इसलिए उनका यह मानना था कि अय्यूब को अपने पहले वाली स्थिति में आने और चंगाई पाने के लिए मन फिराना आवश्यक है। 22:21-30 में एलीपज द्वारा दी गई सलाह मोटे तौर पर ''अच्छी सलाह'' थी पर यह अय्यूब की परिस्थितियों पर लागू नहीं होती थी। फिर भी शायद उसकी सलाह परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों को बढ़ाने में आज हमें सहायता दे सकती है।

*परमेश्वर के साथ मेल मिलाप कर लो* (22:21)। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए हमें अन्य गाड़ियों वालों की सुरक्षा के लिए यातायात के चिह्नों पर ध्यान देना आवश्यक होगा। लाल बत्ती होने पर हम यह समझ जाते हैं कि अब दूसरी गाड़ियों को जाने देना चाहिए। इसलिए हमें उन्हें पहले जाने देना आवश्यक है। शायद निकट आ रही गाड़ी के छोटी कार के बजाय तेल से भरा टैंकर होने पर हम अधिक चौकस हो जाते हैं। इसी प्रकार से हमें अपनी इच्छाओं को अपने सृष्टिकर्त्ता की इच्छा के साथ मिला देना चाहिए। इससे न केवल हमारा सम्भावित खतरा टल जाएगा बल्कि यह हमें वैसे बना भी देगा, जैसे वह हमें बनाना चाहता है। परमेश्वर के निकट आना ही अपनी पूरी क्षमता को पाने के लिए एक मात्र सही रास्ता है। पौलुस ने लिखा, ''क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं; और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिए सृजे गए जिन्हें परमेश्वर ने पहिले से हमारे करने के लिए तैयार किया'' (इफिसियों 2:10)।

*परमेश्वर की शिक्षा मान लो* (22:22)। शिक्षित होना कई बार कठिन काम होता है। पढ़ाए

जा रहे विषय पर केवल अच्छा ज्ञान होना ही काफी नहीं होता, बल्कि उस जानकारी को छात्रों तक प्रभावशाली ढंग से पहुंचाने की योग्यता का होना भी आवश्यक है। इसी प्रकार से कोई शिक्षक सीखने की इच्छा न रखने वाले छात्रों को समझा नहीं सकता। दिन में सपने देखना, सो रहा या कोई और काम कर रहा छात्र शिक्षक की पूरी बात को समझ नहीं पाएगा कि वह क्या कहना चाहता है। परमेश्वर के वचन के छात्रों के रूप में उसकी शिक्षा को समझने और मानने की कोशिश करनी आवश्यक है। यीशु अपने सुनने वालों से अक्सर कहता था, ''जिसके सुनने के कान हों वह सुन ले'' (मत्ती 11:15; 13:9, 43)। परमेश्वर के संदेश को समझ लेने के बाद हमें उसे व्यवहार में लाना आवश्यक है। याकूब ने कहा, ''परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुनने वाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं'' (याकूब 1:22)।

*घर से कुटिल कामों को दूर करो* (22:23, 24)। स्पष्ट है कि एलीपज का मानना था कि अय्यूब ने बेईमानी से दौलत इकट्ठी की थी और यह कि परमेश्वर को ग्रहण योग्य होने के लिए उसे सोने को सही मालिकों तक लौटाना आवश्यक है। ऐसा करके अय्यूब ने यह साबित करना था कि वह परमेश्वर को पैसे से बढ़कर प्रेम करता है। (बेशक अय्यूब के बेईमान होने और परमेश्वर से बढ़कर दौलत से प्यार करने का एलीपज का विचार गलत था।) क्या हमारी चीज़ों में से कोई ऐसी चीज़ है जिसे हम परमेश्वर से बढ़कर चाहते हैं? क्या हमारे घरों में ऐसी चीज़ है जिसका हमारी मसीही जीवन शैली के साथ टकराव है? क्या परमेश्वर को भाने के लिए कोई ऐसी चीज़ है जिसे हमें बेच देना, फैंक देना या किसी दूसरे को दे देना आवश्यक है।

*सारांश।* अपने जीवन परमेश्वर को सौंप देने से बहुत सी आशिषें मिलती हैं। परमेश्वर को उसका वह आदर वाला स्थान दिया जाता है जिसका वह हक्कदार है (22:25, 26), और पश्चात्तापी आदमी की प्रार्थनाएं सुनी जाती हैं (22:27)। आम तौर पर परमेश्वर उसके मन की इच्छाओं को पूरा कर देता है (22:28)। और तो और वह ज़रूरतमंदों की सहायता भी कर सकता है (22:29, 30)। डी. स्टिवर्ट

---

टिप्पणियां

[1]1780 में बी. केन्निकॉट ने सुझाव दिया कि सोपर का विलुप्त भाषण अय्यूब 27:13–23 में मिल सकता है। देखें आर. के. हेरिसन, *इंट्रोडक्शन टू द ओल्ड टैस्टामैंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1969), 1033. और लोगों ने सोपर को अय्यूब के अंतिम भाषण के विभिन्न भाग बताते हुए इसी नमूने का अनुकरण किया है, परन्तु विचार की एकरूपता के साथ नहीं। अधिक जानकारी के लिए देखें *परिशिष्ठ: भाषणों के तीसरे ''अधूरे'' दौर की समस्या,* पृष्ठ 186–87. [2]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइ: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 192. [3]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 229. [4]जॉन एन. ओसवाल्ट, ''*gābar,*'' *थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* सम्पा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वाल्टके (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 1:148–49. [5]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 325. [6]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 411. [7]फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, ऐंड चार्ल्स ए. ब्रिगस, *ए हिब्रू ऐंड इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ द ओल्ड टैस्टामैंट* (ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रैस, 1968), 130; और लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 1:148. [8]आल्डन, 231.

[9]कार्ल शुल्टज़, "*awâ*," *थियोलॉजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट*, सम्पा. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लीसन एल. आर्चर, जूनियर, और ब्रूस के. वाल्ज़ (शिकागो: मूडी प्रैस, 1980), 2:651. [10]आल्डन, 231.

[11]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 1:755. [12]22:2 में क्रिया शब्द *sakan* कम तीव्र रूप में दो बार मिलता है। इसका अनुवाद "काम का होना" और "के लिए उपयोगी होना" हुआ है। [13]हार्टले, 332. [14]वहीं, 333. [15]आल्डन, 237. [16]NASB में "उनका" के बजाय अय्यूब के सम्बन्ध में "तेरा" है (देखें ASV; NKJV)। कुछ संस्करणों में "उन्हें" या "लोगों" को फैंका जाना है जो कि बेहतर कथन है (KJV; NIV)। आयत 29 की अन्य कठिनाइयों के कारण कई अनुवाद हुए। [17]आल्डन, 239. [18]हार्टले, 335.